الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness

ब्रह्माण्ड मानव बुध्दिमत्ता, सम्मान और लक्ष्य का प्रजापति है।

अनुक्रमणिका

ब्रह्माण्ड मानव बुध्दिमत्ता, सम्मान और लक्ष्य का प्रजापति है।

क्या आपने कभी किसी दिन ब्रह्माण्ड की श्रृष्टि के बारे में विचार किया?

ब्रह्माण्ड के श्रृष्टि कि बुध्दिमत्ता।

मानव की सृष्टि करना और उसको सम्मान देना।

पुरुष के समान स्त्री को सम्मान देना।

मनुष्य के सृष्टि की बुध्दिमत्ता।

इन सब के बाद ऐ मनुष्य...

ब्रह्माण्ड मानव बुध्दिमत्ता, सम्मान और लक्ष्य का प्रजापति है।

क्या आपने कभी किसी दिन ब्रह्माण्ड की श्रृष्टि के बारे में विचार किया?

ईश्वर के श्रृष्टी में विचार करना विश्वास (ईमान) की ओर बुलाने वाला बहुत बडा साधन है। जिससे मानव के अंदर निश्चय बडता है, और प्रजापति उसका ज्ञान और बध्दिमत्ता की महानता का ज्ञान होता है। ईश्वर ने आसमान और धरती को सही बनाया है। ज्ञान दोनो की बेवजह श्रृष्टि नही की और न उसने किसी चीज को बेकार बनाया। ईश्वर ने कहा खुदा ने आसमन और ज़मीन को हिकमत के साथ पैदा किया है। कुछ शक नही कि ईमान वालों के लिए इसमें निशानी है। (अनकबूत, 44)

इस ब्रह्माण्ड में अन-गिनत प्राणी हैं। आपके विचार से इनकी श्रृष्टि करने में क्या हिकमत है?

इस ब्रह्माण्ड में बहुत सी खुली निशानियाँ हैं। जिसमें ईश्वर की क्षमता और उसकी महानता का सुबुत है। आज तक आधुनिक विज्ञान ऐसी-ऐसी निशानियाँ खोज कर निकाल रहा है, जिससे मानव जाति को महा प्रजापति बुध्दिमान की महानता का ज्ञान होता है।

हे मेरे ईश्वर

जब मैं अंतरिक्ष के (नई) अधुनिक चित्रं क आलग अलग होते हुए देखता हूँ। तो मेरी सबसे पहली प्रतिक्रियो ये होती है के स्वतः मैं चीखने लगाता हूँ। ऐ मेरे ईश्वर सारी परिश्रम का फल मिलगया। मेरी जिंदगी की खसम ये बहुत अद्भूत विषय है।

पोल मोरडेन

कॉब्रेज्ड यूनिवरसिटी का खागेल शास्त्रज्ञ

अगर मानव गंभीर रुप से ब्रह्माण्ड में और श्रृष्टि में विचार करेगा तो वो ज़रुर विश्वास करलेगा कि ये ब्रह्माण्ड निश्चित रुप से सही क्रम में बनाया गया है। जिसकी बुध्दिमान, पराक्रमी ईश्वर ने श्रृष्टि की है। इस ब्रह्माण्ड के आसमान, तारे, सौर-मंडल, पृथ्वी और पृथ्वी में प्राप्त होने वाले सागर, नेहर, बगीचे, पहाड, जानवर और पेड-पौधे सबको ईश्वर ने ही श्रृष्टि की है। क्या काफिरों ने नही देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, तो हम ने जुदा-जुदा कर दिया। और तमाम जानदार चीज़ें हमने पानी से बनायी, फिर ये लोग ईमान क्यों नही लाते और हमने ज़मीन में पहाड बनाये ताकि लोगों (के बोज़) से हिलने (और झुकने) न लगे, और उसमें कुशादा रास्ते बनाये ताकि लोग उन पर चले। और आसमान को महफूज़ छत बनाया इस पर भी वे हमारी निशानियों से मुँह फेर रहे हैं। और वही तो है जिसने रात और दिन और सूरज और चाँद को बनाया (ये) सब (पानी, सूरज और चाँद सितारे) आसमान में (इस तरह चलते है गोया) तैर रहे हैं। (अंबीया, 30-33)

जब बुध्दिमान मानव ईश्वर की श्रृष्टि पर ध्यान देगा तो अवश्य यह ज्ञान प्राप्त होगा कि इस ब्रह्माण्ड में रहनेवाली हर चीज़ ईश्वर की पूजा करती है। इस ब्रह्माण्ड का प्रत्येक अंश ईश्वर की महानता का स्मरण करते हैं,

ईश्वर ने कहा जो चीज़ आसमानों में है, और जो चीज़ ज़मीन में है, सब खुदा की तस्बीह करती है, जो हखीखी बादशाह, पाक ज़ात, जबरदस्त हिकमत वाला है। (अल जुमुआ,1)

इस ब्रह्माण्ड की हर चीज़ ईश्वर के आगे नत-मस्तक होती है। क्या तुमने नही देखा कि जो (मखलूक) आसमानों में हैं और जो ज़मीन में है और सूरज़ और चाँद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और चारपाये और बहुत से इन्सान खुदा को सजदा करते हैं, और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है और जिस आदमी को खुदा ज़लील करे, उसको कोई इज्ज़त देनेवाला नही। बे शक खुदा जो चाहता है करता हैं। (अल हज, 18)

इसी प्रकार से सारा ब्रह्माण्ड ईश्वर कि स्मरण करता है और उसकी पूजा करता है। ईश्वर ने कहाः- क्या तुमने नही देखा कि जो लोग आसमानों और

ज़मीन में है खुदा की तस्बीह करते है और पर फैलाये हुए जानवर भी और सब अपनी नमाज़ और तस्बीह (के तरीखे) जानते हैं, और जो कुछ वे करते हैं (सब) खुदा को मालूम है। (अल नूर, 41)

निष्कर्श ये हुआ कि मोमिन ये देखेगा कि सारा ब्रह्माण्ड एक दल के रुप में एक ईश्वर की ओर चल रहा है। तो वो भह इस धन्य और अच्छे दल के साथ चलने लगेगा। तो फिर उसका जीवन संतोषमय होगा और उसकी भावना को स्थिरता मिलेगी।

देवत्व के प्रमाण

मेरा ग्रह को देखना देवत्व का एक पल था।

इदगार मिचेल खगोल यात्रा

चाँद पर जानेवाला छटा

ये इश्वर की प्राणी है

इस मामले के देखने से ये अवश्य है के ये मनुष्य को बदल दे, और ये भी अवश्य है के ये मामला मनुष्य को ईश्वरीय प्राणी का आपकलण कराता है, और ईश्वर से प्रेम की भावना बडाता है। और वो (ग्रहमण्डल) ब्रह्ममाण्ड के बारे में बात-चीत कर रहा था।

जेम्स एवैल

खगोलयात्री

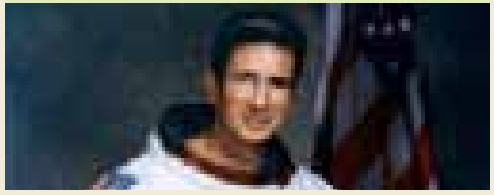

ईश्वर का मनुष्य को सम्मान प्रधान

वो इस्लाम जो अल्लाह का बनाया हुआ नियम है। इसको हम शुध्द रुप से महसूस करते हैं। केवल अल्लाही के आदेश से पहाड, समंदर, ग्रह और
सितारे चलाते हैं अपनी कक्षाओं में घूमते हैं। ये सारा ब्रह्माण्ड उसी अल्लाह के आदेश का पालन करता है। इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड का कण-कण यहाँ तक के निर्जीव भी अल्लाह के आदेश का पालन करते हैं। लेकिन मनुष्य इस कानून से अपवर्जित है। क्यों के अल्लाह ने मानव को मनो भावना की स्वतंत्रता देखा है। इसीलिए मानव को ये छूट प्रात्प है वो अल्लाह के आदेश के आगे आत्मसमर्पण करें या स्वयं कोई नियम बनाले और अपने पसंदीदा धर्म पर चलें दुर्भाग्य से मानव ने अधिकाश तोर पर दूसरा मार्ग अपने लिए पसंद किया हैं।

डिबोरा पोटर

अमेरिका पत्रकार

ब्रह्माण्ड के श्रृष्टि कि बुध्दिमत्ता।

1. ईश्वर के एकीकरण का सबूत।

विशाल ब्रह्माण्ड, इसमें स्थिर प्राणी और चमत्कार ईश्वर के पराक्रमी और रचनात्मकता की महानता का सबसे बडा सबूत है। यह बात केवल ईश्वर के एक होने का प्रदर्शन करती है, उसके अलावा कोई भगवान नही है, और न कोई दूसरा ईश्वर है।

ईश्वर ने कहाः- और उसी कि निशानियों (और तसर्रूफात) में से हैं कि उसने तुम्हे मिट्टी से पैदा किया फिर अब तुम इन्सान होकर जगह-जगह फैल रहे हो। और उसी कि निशानियों (और तसर्रूफात) में से हैं कि उसने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स की औरतें पैदा की, ताकि उनकी तरफ (माइल होकर) आराम हासिल करो और तुम में मेहनत और मेहरबानी पैदा कर दी। जो लोग गौर करते हैं उनके लिए इन बातों में (बहुत सी) निशानियाँ है। और उसीकी निशानियों (और तसर्रूफात) में से हैं आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों और रंगों का जुदा-जुदा होना, अखलवालों के लिए (बहुत सी) निशानियाँ हैं। और उसीकी निशानियों (ओर तसर्रूफात) में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना और उसके फज़ल का तलाश करना, जो लोग सुनते है उनके लिए इन (बातों) में (बहुत सी) निशानियाँ हैं। और उसी की निशानियों (और तसरुफात) में से है कि तुमको खौफ और उम्मीद दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और आसमान से मेंह बरसाना है, फिर ज़मीन को उसके मर-जाने के बाद जिंदा (व हरा-भरा) करदेता है। अखल वालों के लिए इन (बातों) में बहुत सी निशानियाँ है। और उसीकी निशानियों (और तसर्रूफात) में से है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से खाइम है। फिर जब वोह तुम्को ज़मीन में से (निकालने के लिए) आवाज़ देगा तो, तुम झट निकल पडोगे। और आसमानों और ज़मीन में जितने (फरिश्ते और इन्सान वगैरा है उसी के (मख्लूक) हैं, और तमान उसके फर्म बरदार है। (अलरुम, 20-26)

ईश्वर ने कहा कहदो कि सब तारीफ खुदाही को (मुनासिब) है, और उसके बंदों पर सलाम है, जिनको उसने चुनलिया। भला खुदा बेहतर है या वे, जिनको ये (उसका) शरीक बनाते हैं? भला किसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और (किसने) तुम्हारे लिये आसमान से पानी बरसाया? (हमने!)। फिर हमने उससे हरे-भरे बाग उगाये। तुम्हारा काम तो न था कि तुम उनके पेड़ों को उगाते तो क्या खुदा के साथ कोई और भी माबूद है? (हरगिज़ नही।) बल्कि यो लोग रास्ते से अलग हो रहे हैं। भला किसने ज़मीन को करारगाह बनाया और उसके बीच नहरें बनाई और उसके लिए पहाड बनाये और (किसने) दो दरियाओं के बीच ओट बनाये। (ये सब कुछ खुदाने ही बनाया) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है? (हर गिज़ नही) बल्के उनमें अक्सर समझ नही रखते। भला कौन बे करार की इल्तेजा खुबूल करता है, जब वह उससे दुआ करता है। और (कौन उसकी) तकलीफ को दूर करता है, और (कौन) तुमको ज़मीन में (अगलों का) जानशीन बनाता है? (ये सब कुछ खुदा करता है) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है? (हरगिज़ नही, मगर) तुम बहुत कम गौर करते हो? भला कौन तुमको जंगल और दरिया के अंधेरों में रास्ता बताता और (कौन) हवाओं को अपनी रहमत के आगे खुश-खबरी बनाकर भेजता है? (ये सबकुछ खुदा करता है) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है? (हरगिज़ नही) ये लोग जो शिर्कत करते हैं, खुदा (की शान) उससे बुलंद है। भला कौन खिलखत को पहली बार पैदा करता, फिर उसको बार-बार पैदा करता रहता है, और (कौन) तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? (ये सब कुछ खुदा करता है) तो क्या खुदा के साथ कोई और माबूद भी है? (हरगिज़ नही) कहदो कि (मुशरिकों) अगर तुम सच्छे हो तो दलील पेश करो। (अल नम्ल, 59-64)

2. ब्रह्माण्ड को मानव के लिए अनुयायी।

ईश्वर ने मानव को वस्तुओं और भौतिक वाद की पूजा करने से मुक्तित दी। इस ब्रह्माण्ड में पृथ्वी, आकाश में स्थिथ हर वस्तु को केवल अपने सदाचार और उदारता से मानव के लिए अनुपाथी बनाया, ताकि पृथ्वी को आबाद करने और इसमे मानव को अपना उत्तराधिकार बनाने का लक्ष्य पूरा हो, और साथ-साथ भक्ति भावना का उद्देश्य संपूर्ण हो। यहाँ अनुयायी के दो तातपर्य हैं 1) ईश्वर की ज़ात, सदाचार, उदारता और उसकी मानता को पहचान ने के लिए। 2) मानव को आदरनीय बनाने और मानव के लिए अनुयायी की हुई वस्तुवों से उसके दर्जे को ऊँचा करने के लिए। ईश्वर ने कहा और जो कुछ आसमानों मे है और जो कुछ ज़मीन में है, सबको अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया। (अल जासिया, 13)

ईश्वर ने कहा खुदा ही तो है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और आसमान से मेंह बरसाया फिर उससे तुम्हारे खाने के लिए फल पैदा किये, और कश्तियों (और जहाज़ों) को तुम्हारे फरमान के तहत किया, ताकि दरिया और समंदर में उसके हुक्म से चले, और नहरों को भी तुम्हारे फरमान के तहत किया। और सूरज और चाँद को तुम्हारे लिए काम में लगा दिया, कि दोनों (दिन-रात) एक दस्तूर पर चल रहे हैं, और रात और दिन को भी तुम्हारे लिए काम में लगा दिया। और जो कुछ तुमने माँगा, सब में से तुमको इनायत किया, और अगर खुदा के एहसान गिनने लगे तो गिन-न-सको, (मगर लोग नेमतों का शुक्र नही करते) कुछ शक नही की इन्सान बडा बे इन्साफ और ना शुक्रा है। (इब्राहीम, 5)

नबुव्वत के प्रमाण

मुहम्मद (स) अनपढ़ मनुष्य जिनकी अनपढ़ समाज में परवरिश हुई। कैसे उनके अंदर ये शक्ति उत्पन्न हो गई के वो खुराने करीम के बतायेगये चमत्कार समझ गये, और वो ऐसे चमत्कार जिसको आधुन विज्ञान आज-तक खोज कर रहा है। इसी कारण ये बात निश्चय है कि ये कलाम (खुरान) अल्लाह का कलाम है।

डिबोरा पोटर

अमेरिका पत्रकार

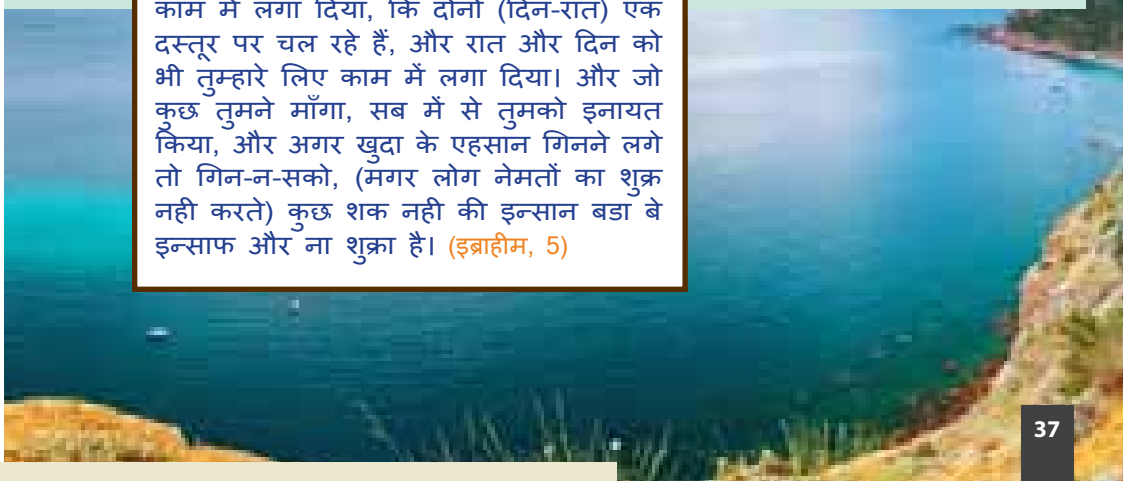

3. शायद कि तुम अपने ईश्वर से मिलने पर विश्वास रखते हो।

निश्चित रुप से आसमानों और पृथ्वी की सृष्टि करने में (मानव की सृष्टि से हटकर) मृत्यु के बाद दुबारा ज़िंदा किये जाने और इकठ्टा किये जाने पर खुला सुबूत है, क्या सृष्टि को दुबारा पैदा करना पहली मर्तेबा पैदा करने से ज्यादा आसान नहीं है?ईश्वर ने कहा और वही तो है जो खिलख़त को पहली बार पैदा करता है, फिर उसे दुबारा पैदा करेगा और यह उसको बहुत आसान है। (अल् रुम, 27)

परन्तु मानव की सृष्टि से आकाश और पृथ्वी की सृष्टि बहुत बडी बात है। ईश्वर ने कहा आसमानों और ज़मीन को पैदा करना लोगों के पैदा करने के मुक़ाबले में बडा (काम) है। लेकिन अकसर लोग नहीं जानते। (ग़ाफीर, 57)

और ईश्वर ने कहा खुदा वही तो है, जिसने सुतूनों के बगैर आसमान, जैसा कि तुम देखते हो, (इतने) ऊँचे बनाये, फिर अर्श पर जा ठहरा और सूरज और चांद को काम में लगा दिया। हर एक-एक तै मीयाद तक घूम रहा है। वही (दुनिया के) कामों का इंतिज़ाम करता है। (इस तरह) वह अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करता हैं कि तुम अपने परवरदिगार के रु-ब-रु जाने का यक़ीन करो। (अल राद, 2)

सत्य एक है

आप अल्लाह की इस जैसी प्राणी को देखें और अल्लाह पर विश्वास ना करें ये बात मेरी राय में असंभव है.... इस विषय ने मेरे विश्वास को बहुत अधिक दृंड बना दिया। मैं चाहता हूँ कि यहाँ पर इस दृश्य का विवरण करने के लिए अधिक शब्द हो।

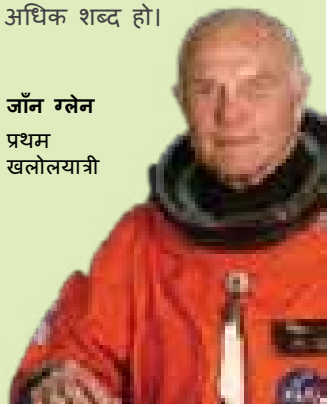

जॉन ग्लेन
प्रथम
खलोलयात्री

आप ब्रह्माण्ड से किसे ओर है

ये बहुत से आकाशगंगा का समूह का एक चित्र है। इसमें से एक या इसमें से एक छोटा सा कण वो आकाशगँगा है जिसमें हमारा सोर मंडल है। लेकिन हमारे इस आकाशगंगा में 100000000000सूरज हैं और सूरज पृथ्वी से 1300000दरजे बडा है। और पृथ्वी आप के घर से (जब के आपके घर का क्षेत्र में ग्रहण 1020144000000करे) दर्जे बडी है। और आप का घर आपसे कितने दर्जे बडा है।

समुद्र का एक तिनका

अबतक जो सबसे बडे सिनारे की खोज की गयी है वो है। जो हम से 500 प्रकाश वर्ष की दूरी पर है, और सूर्य से आकार में 9,261,000,000 दर्जे बडा है। यानी 9 बिलियन 261 मिलियन दर्जे बडा है। सूर्य पृथ्वी से 13,00000 दर्जे बडा है।

मानव की सृष्टि करना और उसको सम्मान देना।

ब्रह्माण्ड, आकाश और पृथ्वी महान तो हैं, लेकिन ईश्वर ने हर विषय को मानव के लिये अनुयायी बनाया। और जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है सब को अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया। (अल् जासिया, 13)\

यह सब कुछ मानव के सम्मान और सारी सृष्टि से मानव को महान बनाने के लिये किया गया। और हमने बनी आदम को इज़जत बख्शी और उन को जंगल और दरिया में सवारी दी, और पाकीज़ा रोज़ी अता की, और अपनी बहुत सी मख्लुखात पर फज़ीलत दी। (अल् इसरा, 70)

ईश्वर ने मानव की सृष्टि की और हमें आदम की सृष्टि और उसको सम्मान देने की कहानी सुनायी फिर शैतान के भटकाने के कारण आदम के जन्नत से ज़मीन पर उतरने की कहानी सुनायी।

और हमी ने तुम्को (शुरु में मिट्टी से) पैदा किया, फिर सूरत शकल बनायी फिर फरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगो सजदा करो तो (सब ने) सजदा किया, लेकिन इब्लीस, कि वे सज्दा करने वालों में (शामील) न हुआ। (खुदा ने) फरमाया जब मै नें तुझको हुक्म दिया, तो किस चीज़ ने तुझे सज्दा करने से रोका। उसने कहा कि मैं इस से अफ्ज़ल हूँ। मुझे तू ने आग से पैदा किया है और इसे मिट्टी से बनाया है। फरमाया तू (बहिश्त से) उतर जा तुझे मुनासिब नहीं कि यहाँ घमण्ड करे। बस निकल जा, तू ज़लील है। उस ने कहा कि मुझे उस दिन तक मुहलत अता फरमा, जिस दिन लोग (कब्रोंसे) उठाये जायेंगे। फरमाया (अच्छा) तुझ को मुहलत दी जाती है। (फिर) शैतान ने कहा कि मुझे तो तू ने मल्ऊन किया ही है। मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर उन (को गुमराह करने) के लिए बैठूँगा। फिर उनको आगे से और पीछे से और दाएँ से और बाएँ से (ग़रज हर

तरफ से) आऊँगा। (और उनकी राह मारुंगा) और तू उनमें अक्सर को शुक्रगुज़ार नहीं पायेगा। (खुदा ने) फरमाया, निकल जा यहाँ से पाजी मर्दूद। जो लोग उन में से तेरी पैरवी करेंगे मै (उनको और तुझ को जहन्नम में डालकर) तुम सब से जहन्नम को भर दूँगा। और (हम ने) आदम (से कहा कि तुम और तुम्हारी) बीवी बहिश्त में रहो-सहो और जहाँ से चाहो (और जो चहो) खाओ, मगर इस पेड़ के बास न जाना वरना गुनाहगार हो जाओगे। तो शैतान दोनों को बहकाने लगा ताकि उन के सतर की चीज़े, जो उनसे छुपी थी खोल दे और कहने लगा कि तुम को तुम्हारे परवरदिगार ने पेड से सिर्फ इसिलए मना किया है कि तुम फरिश्ते न बन जाओ, या हमेशा जीते न रहो। और उनसे कसम खा कर कहा कि मै तो तुम्हारा भला चाहने वाला हूँ। ग़रज (मर्दूद ने) धोखा दे कर उन को (गुनाह की तरफ) खींच ही लिया, जब उन्होने उस पेड़ (के फल) को खा लिया, तो उनके सतर की चीज़ खुल गयी और वह बहिश्त से (पेड़ों के) पत्ते (तोड़-तोड़ कर) अपने ऊपर चिपकाने (और सतर छिपाने) लगे। तब उनके परवरदिगार ने उनको पुकारा कि क्या मैने तुमको इस पेड़ (के पास जाने) से मना नहीं किया था और बता नहीं दिया था कि शैतान तुम्हारा खुल्लम-खुल्ला दुश्मन है। दोनों कहने लगे कि परवरदिगार। हमने अपनी जानों पर जुल्म किया और अगर तू हमें नहीं बख्शेगा और हम पर रहम नही करेगा, तो हम तबाह हो जायेंगे। (खुदा ने) फरमाया, (तुम सब बहिश्त से) उतर जाओ। (अब से) तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो, और तुम्हारे लिये एक (खास) वख्त तक ज़मीन पर ठिकाना और (ज़िदगी का) सामान (कर दिया गया) है। (यानी) फरमाया कि उसी में तुम्हारा जीना होगा। और उसी में मरना, उसी में से (कियामत को जिंदा करके) निकाले जाओगे। (अल आराफ, 11-25)

सब लोग बराबर है

सारे मानव मान और अधिकार का बराबर हख रखते हुए स्वतंत्र जन्म लेते है। उन्हे बुध्दि और अंतःकरण प्राप्त होती है, और उनपर ये जरुरी है कि वह आपस में एक-दूसरे से भाई चारगी के साथ व्यवहार करें।

मानवाधिकार संगठन के अंतर्राष्ट्रीय धोषणा का पहली धाय

निश्चित रुप से ईश्वर ने मनुष्य को अच्छा रुप दिया है, फिर उसमें प्राण डाली, जिससे वह अच्छे रुप वाला मनुष्य बन गया, जो सुनता, देखता, चलता-फिरता और बात करता है। तो खुदा जो सबसे बेहतर बनाने वाला, बडा बर्कत वाला है। (अल मूमीनून, 14)

ईश्वर ने मनुष्य को हर वह बात सिखायी जिसका जानना उसके लिए अवश्य है, और मनुष्य में ऐसे लाभ और गुण रख दिये जो दूसरे किसी प्राणी में नहीं है जैसेः बुध्दि, ज्ञान, बोल चाल, रुप, अच्छी शक्ल, आदरणीय स्थान, उपयुक्त शरीर और सोंच विचार से ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता दी है। ईश्वर ने मनुष्य को नैतिकता और अच्छी आदतों की ओर मार्गदर्शन दिखाया। ईश्वर ने मनुष्य को सारी सृष्टि से ज्यादा सम्मान दिया, इस सम्मान की उपस्थिति स्त्री और पुरुष दोनों के लिए यह है किः ईश्वर ने ब्रह्माण्ड की सृष्टि के प्रारंभ ही से आदम को पैदा करते हुए मनुष्य को अपने ही हाथों से बनाया, अवश्य रुप से ऐसा सम्मान है जिससे बेडा और कोई सम्मान नहीं। (खुदा ने) फरमाया कि ऐ इब्लीस जिस शख्स को मैं ने अपने हाथों से बनाया उस के आगे सज्दा करने से तुझे किस चीज़ ने मना किया। क्या तू घमंड में आ गया या ऊँचे दर्जे वालों में था? (स्वाद, 75)

ईश्वर ने मनुष्य को अच्छे रुप में बनाया है, ईश्वर ने कहा कि हमने इंसान को बहुत अच्छी सूरत में पैदा किया है। (अल तीन, 4)

ईश्वर ने यह भी कहा और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायी और सूरतें भी पाकीजा बनायी और उसी की तरफ (तुम्हें) लौट कर जाना है। (अल तग़ाबून, 3)

ईश्वर ने सारे मनुष्य के पिता आदम के सामने फरिश्तों को सजदा करने का आदेश देते हुए मनुष्य को सम्मान अता किया है। और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो, तो सबने सजदा किया मगर इब्लीस ने न किया। (अल इस्रा, 61)

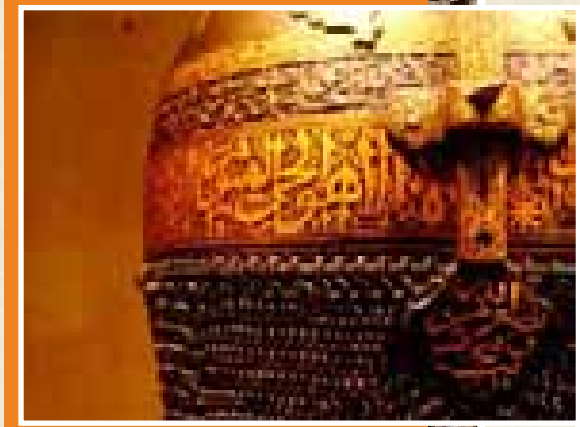

ईश्वर ने मनुष्य को सम्मान दिया और उसको ज्ञान, सोंच-विचार, बुध्दि, कान आँख और दूसरी भावनाएँ अता की। ईश्वर ने कहा और खुदा ने ही तुमको तुम्हारी माँओ के पेट से पैदा किया कि तुम कुछ नही जातने थे और उसने तुम को कान और आँखे और दिल (और उनके अलावा) अंग दिए ताकि तुम शुक्र करो (अल नह्ल, 78)

ईश्वर ने मनुष्य में अपनी रुह (जान) डाली, जिसके कारण मनुष्य में आध्यात्मिक ऊँचाई पैदा हुई। ईश्वर ने कहा जब उस को दुरुस्त कर लूं और उसमें अपनी रुह फूंक दूं तो उस के आगे सज्दे में गिर पड़ना। (स्वाद, 72)

यह मनुष्य के लिए सबसे बडा सम्मान है, इसी कारण एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य को सम्मान देना ज़रुरी है, कैसे यह संभव है कि मनुष्य किसी ऐसे दूसरे मनुष्य पर ज़ुल्म करे जिसमें ईश्वर की रुह डाली गयी है? ईश्वर ने फरिश्ते और जिन्न (भूत) को छोडकर मनुष्य को ज़मीन पर अपना उत्तराधिकारी बनाया। ईश्नवर ने कहा और (वह वख्त याद करने के खाबिल है) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से फरमाया कि मै ज़मीन में (अपना) नायब बनाने वाला हूँ। उन्होनें कहा, क्या तू उसमें ऐसे शख्स को नायब बनाना चाहता है, जो खराबियाँ करें और कुश्त व खून करता फिरें और हम तेरी तारीफ के साथ तसबीह व तक़दीस करते रहते हैं। (खुदा ने) फरमाया, मैं वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (अल बख़रा, 30)

यह बहुत बडा सम्मान है जिसको वह फरिश्तें भी प्राप्त न कर सकें जो ईश्वर के आदेशों को कभी तिरस्कार नहीं करते, और जो सदा ईश्वर की बडाई, प्रशंसा और श्रद्दा करते हैं।

ईश्वर ने आकाश, पृथ्वी और इन दोनों के बीच मौजूद चाँद, सूरज, तारे, ग्रह और आकाश गंगाओं को मनुष्य के लिए अनुयायी कर दिया। ईश्वर ने कहा और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन मे है, सब को अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया, जो लोग गौर करते हैं, उनके लिए उसमें (खुदा की खुदरत की) निशानियाँ हैं। (अल जासिया, 10)

हमारा संदेश

अल्लाह ताला ने हमें चुनलिया है कि जिसको अल्लाह चाहे उसको हम बंदो की इबादत से अल्लाह के इबादत की ओर, संसार की तंगी से विशाल संसार के ओर धर्म के अन्याय से इस्लाम के न्याय की ओर लायें।

रुबई इबने आमीर

सहाबिये रसूल

ईश्वर ने मानव को और सारी मानवता को किसी भी प्राणी को बंधन (बंदगी) से मुक्ति दी है, चाहे उसकी महानता और उदारता कुछ भी हो, और इसमें मनुष्य के लिए स्वतंत्रता की आखरी बुलंदी है, परन्तु मनुष्य को मानव की पूजा और परतंत्रता से एक ईश्वर की पूजा की ओर अग्रसर किया। और एक ईश्वर की पूजा करना ईश्वर के अलावा अन्य की पूजा करने से बहुत बडी स्वतंत्रता है। इसी कारण ईश्वर ने अपने और अपने भक्तों के बीच किसी मध्य वर्ती को स्वीकार नहीं. किया। कुछ लोगों ने ईश्वर और मनुष्य के बीच ऐसे मध्य वर्ती बनालिये जिनको इन लोगों ने दिव्य गुणों से प्रभावित किया। जब कि ईश्वर ने मनुष्य को यह सम्मान दिया कि उसके और ईश्वर के बीच कोई मध्यवर्ती नहीं है। ईश्वर ने कहा इन्होंने अपने उलमा और मशाइख (बुज़ुर्गों) और मसीह इब्ने मरयम को अल्लाह के सिवा खुदा बना लिया, हालांकि उनको यह हुक्म दिया गया था कि एक खुदा के सिवा किसी की इबादत न करें। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। और वह उन लोगों के शरीक मुक़रर करने से पाक है। (अल तौबा, 31)

सारे साधनों को अपनाते हुए भाग्य और नसीब पर विश्वास (ईमान) रखने का आदेश देते हुए मनुष्य को भविष्य के डॅर और चिंता, दुःख, परेशानी से मुक्तित दी हैं। भविष्य और नसीब पर विश्वास रखना मुसलमान मनुष्य को अम्न व आश्ती, इज्ज़त, आदरणीय जीवन का और अतीत मे गुज़री हयी चीज़ों पर अफसोस या ग़म न करने का एहसास पैदा करता है। इसलिए कि यह सब ईश्वर की ओर से है। ईश्वर ने कहा कोई मुसीबत मुल्क पर और खुद तुम पर

नहीं पडती, मगर इस से पहले की हम उसको पैदा करे, एक किताब में (लिखी हुई है), (और) यह (काम) खुदा को आसान है। (अल हदीद, 22)

यह विश्वास (ईमान) मनुष्य के अन्दर स्वयं संतुलन, स्थिरता और बहुत बडा संतोष पैदा करता है इस प्रकार के न उस पर कठिनाइयाँ प्रभाव डालती है और न उसके अंदर डर पैदा करती है, और इसी तरह खुशियाँ और नेमतें मनुष्य को घमंडी नहीं बनाती।

कोई साधन

यहाँ एक मुख्य विषय वह यह है कि भक्त और ईश्वर के अंतरगत कोई साधन नही है, और यही वह बात है जिसको ज्ञानी लोगों ने माना है।

ए थेन दिनेह

फ्रेंच चित्रिकार और बिचारक

मनुष्य की बुध्दी का सम्मान ईश्वर ने अवश्य रुप से मनुष्य की बुध्दि और सोंच विचार की ताक़त को महान मूल्य दिया है, मनुष्य को विचार करने और दूसरों से सबक सीखने का ईश्वर ने आदेश दिया है आकाश और पृथ्वी की सृष्टि में विचार करने, और ज्ञान, बुद्दिमत्ता से सबूत इकट्ठा करने को आवश्यक माना है। ईश्वर ने कहा

(इन काफिरों से) कहो कि देखो तो आसमानों और ज़मीन में क्या-क्या कुछ है, मगर जो लोग ईमान नहीं रखते, उनके निशानियाँ और डरावे कुछ काम नही आते। (यूनूस, 101)

ईश्वर ने बुध्दि को सम्मान देने, उसका ख्याल रखने, उसको काम में लाने, परंपराएँ, भेद-भाव और असहिष्णुता के माध्यम से बुध्दि को स्थिरान करने का आदेश दिया है। इसी प्रकार से बुध्दि को ईश्वर की उपस्थिति और उसके एक होने का सुबूत माना है। परन्तु ईश्वर ने आपसी संप्रदाय दूर करने के लिए बुध्दि को ओर अग्रसर होने का आदेश दिया। ईश्वर ने कहा

(ऐ पैगंबर! इन से) कह दो कि अगर सच्चे होते दलील पेश करो (अल बख़रा, 111)

ईश्वर ने मिथक, धोखा, जादू, जिन्न (भूत प्रेत) से मदद लेने और इस प्रकार के दूसरे कामों से बुध्दि को दूर रखा है।

हर एक मनुष्य अपने आप का जिम्मेदार है, उसके कार्य का उससे हिसाब लिया जायेगा और दूसरे के कार्य से उसका कोई संबंध नहीं होगा। इसी बात की पुष्टि ईश्वर का यह आदेश करता है। और कोई उठानेवाला दूसरे का बोज न उठायेगा (फातीर, 18)

इस सम्मान से "खुरआन ए करीम" गलत विचारों को नज़र अंदाज़ करता है और मानवता को इन ग़लत विचारों के भारी परिणाम से मुक्ति देता है।

पुरुष के समान स्त्री को सम्मान देना।

मानवता का सम्मान किसी एक लिंग के लिए विशेष नहीं है, लेकिन नियम यह है कि हर तरह के सम्मान और आदर में स्त्री पुरुष के समान है। और औरतों का हक़ (मर्दों पर) वैसे ही है जैसे दस्तूर के मुताबिक (मर्दों का) हक़ औरतों पर हैं। (अल बखरा, 228)

ईश्वर ने कहा और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के दोस्त हैं। (अल तौबा, 71)

भविष्य जीवन में अपनी करतूतों का फल लेने में किसी भी प्रकार से स्त्री, पुरुष से अलग नहीं है। ईश्वर ने कहा तो उनके परवरदिगार ने उनकी दुआ खुबूल कर ली। (और फरमाया) कि मै किसी अमल करने वाले के अमल को, मर्द हो या औरत ज़ाया नहीं करता। तुम एक दूसरे की जिन्स हो (आल-इंम्रान, 195)

और ईश्वर ने कहा और जो नेक काम करेगे, मरुद हो औरत, और वो इमानवाला भी होगा, तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे, और उनका तिल बाराबर भी हक़ ना मारा जाएगा। (अल निसा, 124)

ईश्वर ने स्त्री को मानवता कि रुप में सम्मान दिया, इस प्रकार के उसको पुरुष के समान ज़िम्मेदार, आदेशों का पालन करनेवाली और इनाम और रज़ा का योग्यवान बनाया है। परन्तु मानवता के लिए लागू किया जाने वाला सबसे पहला आदेश पुरुष और स्त्री दोनों पर एक सा लागू था। इस प्रकार से कि ईश्वर ने सबसे पहले मानव आदम और उनकी बीवी से कहा और हम ने कहा कि ऐ आदम। तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और जहाँ से चाहो, बे रोक-टोक खाओ (पिओ), लेकिन उस पेड के पास न जाना, नहीं तो ज़ालिमों में (दाखिल) हो जाओगे।(अल बख़रा, 35)

इसी प्रकार से ईश्वर ने स्वर्ग से आदम के निकाले जाने, और आदम के बाद उनकी औलाद की दुर्भाग्य का जिम्मेदार स्त्री को नही ठहाराया, जैसा कि कुछ धर्मों में यह बात मानी जाती है परन्तु ईश्वर ने यह कहा कि आदम ही पहला जिम्मेदार है। और हमने पहले आदाम से वायदा लिया था, मगर वे (उसे) भूल गये और हमने उनमें सब्र व सबात न देखा (सूरः ताहा)

और आदम ने अपने परवरदिगार के (हुक्म के) खिलाफ किया तो, (वे अपनी मंज़ील से) बे-राह हो गये। फिर उनके परवरदिगार ने उनको नवाजा तो उन पर मेहरबानी से तवज्जोह फरमायी और सीधी राह बतायी। (ताहा, 121-122)

इसी प्रकार से स्त्री और पुरुष मानवता में बराबर हैं। ईश्वर ने कहा लोगो! हम ने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, और तुम्हारी क़ौमें और

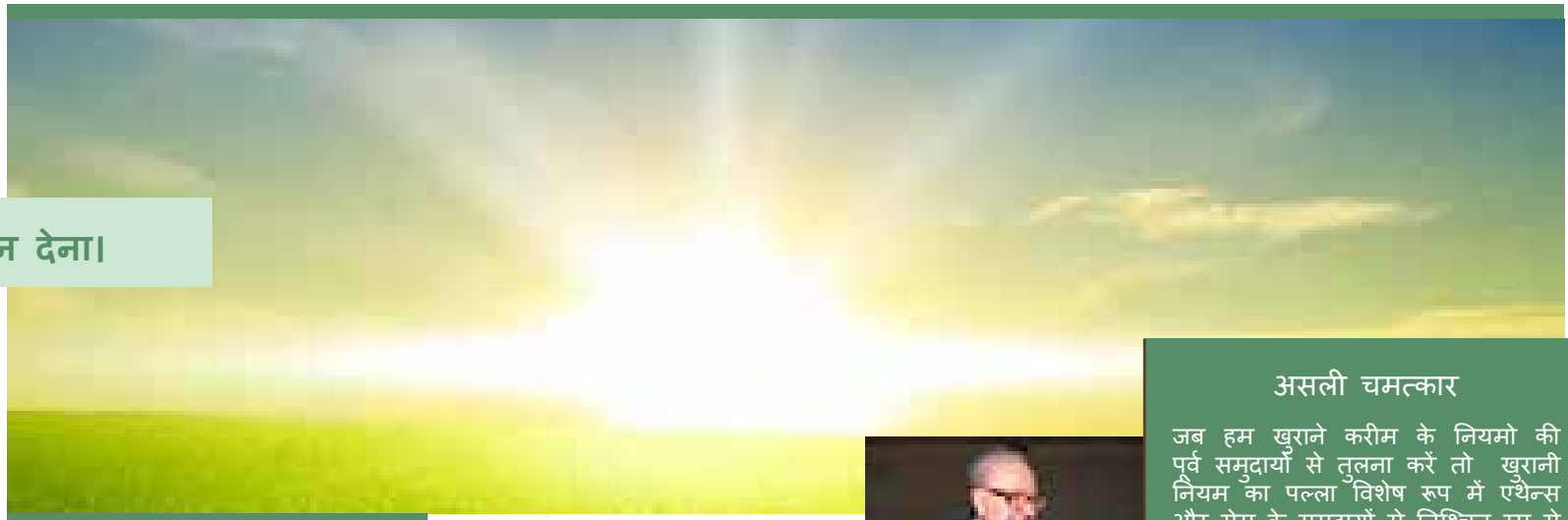

समानता

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने छात्र संघ और क्लब के अधिकार छात्र और छात्राओं के बीच कोई समानता नही किया मगर 26 जुलाई 1964 में लियेगये निर्णय के बाद समानता का आदेश दिया गया।

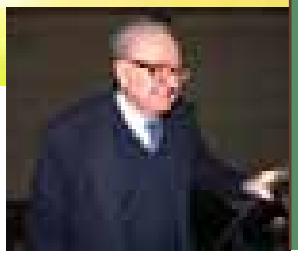

असली चमत्कार

जब हम खुराने करीम के नियमो की पूर्व समुदायों से तुलना करें तो खुरानी नियम का पल्ला विशेष रूप में एथेन्स और रोम के समुदायों से निश्चित रुप से भारी रहेगा। क्यों कि यहाँ पर औरत की छवी असंपूर्ण थी।

रोजोह जारुदी
फ्रेंच दार्शनिक

सारे संसार के धर्मों में औरत का स्थान

रोम में एक बहुत बडा समावेश रखा गया, इसमें औरतों के समस्याओं पर तर्क की गई। फिर यह निर्णय लिया गया कि औरत एक प्राणी है। जिसमें प्राण नही है, और इसी कारण वह परलोक जीवन की वारिस नही होती है। वह एक गंदगी है। इसी कारण वह माँस खाये, न हसे, बल्कि बात तक ना करें। औरत पर यह अवश्य है कि वह अपना समय पूजा-पाठ और सेवा में व्यतीत कर दे। इन लोगोने औरत को इन सारे विषयें से मना करने के कारण उसके मुँह पर एक लोहे का ताला डालदिया था। जिसके कारण औरत चाहे उच्छ परिवार से हो या तुच्छ परिवार से। छोटी-छोटी गलियों में चला करती थी। अपने ही घर में दिन-रात व्यतीत करती थी और उसके मुँह पर ताला हुआ करता था। इससे हटकर औरतों पर शारीरिक दण्ड लागू किये जाते थे। इस खयाल से कि औरत गुमराही का एक कारण है जिसका शैतान लोगों के दिलों को भटकाने के लिए उपयोग करता है।

उनके पास औरत का स्थान

भारत के प्राचीन धर्मे में (यह था) कष्ट, मृत्यु, नर्क, विष, साँप, और आग औरत से भले हैं, औरत को जीवित रहने का अधिकार उसके मालिक और सरदार पतिदेव के जीवन तक ही है। जब वह अपने पतिदेव का शरीर (मृत्योपरान्त) जलते देखे तो अपने-आप को उस आग में डाल दें। वरना सदा उस पर फटकार होती है।

क़बीले बनायें, ताकि एक-दूसरे की पहचान करो (और) खुदा के नज़दीक तुम में ज्यादा इज्जत वाला वह है, जो ज्यादा परहेजगार है। बेशक खुदा सब कुछ जाननेवाला (और) सब से खबरदार है। (अल हूजूरात, 13)

इसी प्रकार से पुरुष और स्त्री निम्न लिखित बातों में संयुक्त और बराबर हैं

विशेष अधिकार में नागरिक होने के नाते ज़िम्मेदारीः- परन्तु स्त्री का नैतिक व्यक्तितत्व सम्मानजनक है, निश्चित रुप से ईश्वर ने स्त्री को फर्ज़ और पालन करने की योग्य में पुरुष के समान माना है, और स्त्री को खरीदने, बेचने और इस प्रकार के दूसरे तमामा व्यवहार करने और स्वभाव का अधिकार दिया है। यह तमाम व्यक्तितत्व अधिकार, बिना किसी ऐसी पाबंदी के जो स्त्री की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करें, अनुसरणीय है लेकिन वह पाबंदी जिससे स्वयं मनुष्य अपने आप को प्रतिबंधित करे। ईश्वर ने कहा मर्दों को उन कामों का सवाब है, जो उन्होनें किया, औरतों को उन कामों का सवाब है जो उन्होंने किया (अल निसा, 32)

ईश्वर ने स्त्री को विरासत का अधिकार दिया है। ईश्वर ने कहा

जो माल माँ-बाप और रिश्तेदार छोड़ मरे, थोडा-हो या बहुत, उसमें मर्दों का भी हिस्सा है और औरतों का भी। ये हिस्से (खुदा के) मुकरर किये हुए हैं। (अल निसा, 7)

स्त्री जब अच्छा करे या बुरा, उसकी स्थिति बिलकुल पुरुष के समान है। ईश्वर ने कहा और जो चोरी करे, मर्द हो या औरत, उनके हाथ काट डालो । ये उनके फलों की सजा और खुदा की तरफ से सीख है और खुदा जबरदस्त (और) हिकमत वाला है। (अल माइदा, 38)

भविष्य जीवन में मिलनेवाला बदला। ईश्वर ने कहा जो शख्स नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत और वह मोमिन भी होगा, तो हम उसको (दुनिया में) पाक (और आराम की) जिंदगी से जिंदा रखेंगे और (आखिरत में) उन के आमाल का निहायत अच्छा बदला देंगे। (अल नहल 97)

आपसी बंधन और हमदर्दी। ईशवर ने कहा

मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के दोस्त हैं कि अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातो से मना करते, और नमाज़ पढ़ते, और ज़कात देते और खुदा और उसके पैगंबर की इताअत करते हैं। यही लोग हैं, जिन पर खुदा रहम करेगा बेशक खुदा ग़ालिब हिक्मत वाला है। (अल तौबा 71)

निश्चित रुप से स्त्रयों के साथ सहानुभूति और हमदर्दी करने का आदेश है। ईश्वर ने युध्दों में स्त्री की हत्या करने से मना किया, अस्वस्थ स्त्री के साथ खाना खाने और व्यवहार करने का आदोश दिया है। जब के यहूद स्त्री के साथ व्यवहार करने से रोकते थे उसको नीच समझते थे, उससे दूर रहा करते थे और उसके स्वस्थ होने तक उसके साथ खाना नहीं खाया करते थे। अल्लाह के रसूल (मुहम्मद) की ओर से सत्री को बहुत बडा सम्मान प्राप्त हुआ है, आप ने कहा कि "तुम में से सब से अच्छा वह व्यक्ति है जो अपने परिवार के साथ अच्छा हो, और मै अपने परिवार वालों के साथ अच्छा व्यवहार करता हूँ"। (इस हदीस को इमाम तिर्मिजि ने वर्णन किया है, और कहा कि यह हदीस "हसन" और "सहीह" है)।

यह क्या (हत्याचार) शोषण है ?

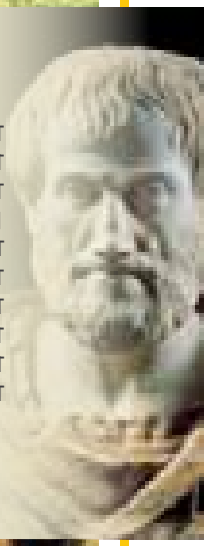

पुरुष के सामने औरत का स्थान मालिक के सामने सेवक की तरह। बुध्दिमत्ता के सामने कारिगरी की तरह। और युनानी के सामने बरबरी (एक हत्याचारी लोक का नाम) की तरहा है। औरत एक असंपूर्ण प्राणी है, जिसको उन्नती की सीढी के निचले स्थर पर खडा छोड दिया गया है।

अरस्तु

युनानी दार्शनिक

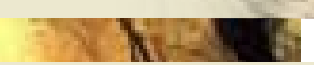

फ्रेंच स्त्री

सन् 586 में फ्रेंच के एक राज्य में समावेश का आयोजन किया गया। जिसमें स्त्री के बारेमें यह विचार किया गया कि, क्या इसको (स्त्री को) इन्सान समझा जाये या नही और इस समावेश में उपस्थित महा जनों का अंतिम निर्णय यह था कि स्त्री इन्सान है। परंतु स्त्री को पुरुष की सेवा के लिये ही पैदा कियागया है। फरवरी 1938 में एक ऐसा शासन लागू किया गया जो उन सारे नियमों को शुद्ध करता है जो फ्रेंच स्त्री को वित्तीय लेन-देन से मना करते थे, और फिर फ्रांस के इतिहास में स्त्री को यह अधिकार मिला कि वह अपने नाम से ब्यांक में चालू खाता खोले ।

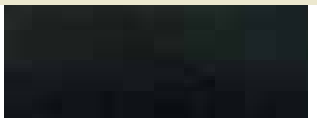

अन्याय से पीडित महिला

मैं और मेरा दिल बध्दिमत्ता और ज्ञान को खोजने, ढूँढ़ने, और जानने के लिए निकले, और यह ज्ञान प्रदान करने के लिए कि बुराई अज्ञान है, और मूर्खता पागलपन हैं, मेरी यह भावना है कि मृत्यु से अधिक कडवी वह औरत है जो जाल है, उसका दिल जंजीर है, और उसके हाथ बेडियाँ है)7(जामिया-

दिव्य पुस्तक (बाइबिल)

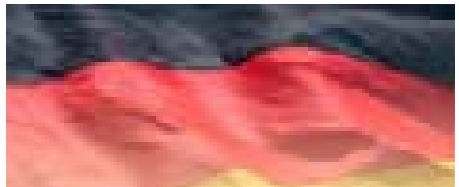

समानता

इस्लाम के छाया में महिला को उसकी स्वतंत्रता प्राप्त हुई, और अच्छी ख्याति मिलि। इस्लाम ने महिलाओं को पुरुषो के समान साजेदार माना है और इनमें से हर एक को दूसरे के बिना असंपूर्ण समझा है। इस्लाम ने महिला कों शिक्षा की ओर प्रेरेपित किया। ज्ञान और आचार प्राप्त करने का अधिकार दिया, महिला को अपनी संपत्ती का मालिक बनने और व्यवहार का अधिकार दिया। इसी प्रकार विवाह करने का और विचार अभिव्यक्तित की स्वतंत्रता का अधिकार दिया।

मुना मार्कलोस्की
जर्मन डिल्पोमेट

जब आप के युग में स्त्री को मारा गया तो आप बहुत नाराज़ हुए, और कहा कि "तुम में से कोई अपनी बीवी को नौकरानी की तरह मारता है, और फिर रात में उसको अपने गले लगाता है" (इस हदीस को इमाम बुखारी ने वर्णन किया है)

और जब कुछ स्त्रियाँ अपनी पतियों की शिकायत लेकर अल्लाह के रसूल के पास पहुँची तो आपने कहा" निश्चित रुप से बहुत सी स्त्रियाँ अपने-अपने पति की शिकायत लेकर मुहम्मद के घर वालों के पास आयी हैं। ऐसे पुरुष तुम में से अच्छे लोग नहीं है। (इस हदीस को अबू दावूद ने वर्णन किया है)

अवश्य रुप से स्त्री को वह अधिकार दिये गये है, जो पुरुष को नहीं दिये गये। ईश्वर ने पिता से ज्यादा माता का सम्मान करने का आदेश दिया है। एक बार एक व्यक्तित अल्लाह के नबी के पास आया और कहने लगा ऐ अल्लाह के रसूल लोगों में कौन सब से अधिक मेरे अच्छे व्यवहार का हक़दार है? (और एक दूसरे वर्णन में आया है कि लोगों में कौन मेरी अच्छाइयों का अधिक हक़! रखता है?) तो आपने कहा तुम्हारी माँ। उस व्यक्ति ने कहा फिर इसके बाद कौन ज्यादा हक़दार! है? तो आपने कहा तुम्हारी माँ। उस व्यक्ति ने कहा फिर कौन? तो आपने कहा तुम्हारी माँ। उस व्यक्ति ने कहा फिर कौन? तो आपने कहा तुम्हारे पिता (इस हदीस से "बुखारी" और "मुस्लिम" सहमत हैं)।

अनुचित सकारात्मक कानून

राजा जी ने यह कानून लागु किया कि औरत के लिए बैबल पढ़ना प्रतिबंध है। इसी प्रकार से (ब्रिटिश सार्वजनिक कानून के अनुसार) लग-भग सन् 1850 ई.में औरतों का शुमार नागरिकों में नही हुआ करता था ना उन्हें निजि अधिकार थे, ना उन्हे अपने वस्त्र के और ना अपने माथे के पसीने से कमाये हुए दौलत के मालिक बनने का अधिकार था।

राजा हेन्ड्र आष्टम

ईश्वर ने लड़कों के पालन-पोषण से ज्यादा लड़कियों के पालन-पोषण पर अधिक पुण्य रखा है। अल्लाह के रसूल ने कहा जिस व्यक्ति को लड़कियों के पालन-पोषण में कोई कष्ट हुआ हो, और वह इन लड़कियों के साथ अच्छा व्यवहार किया हो, तो ये लड़कियाँ उस व्यक्ति के लिए नरक की आग से मुक्ति का कारण होगी। (इस हदीस से "बुखारी" और "मुस्लिम" सहमत है)। अल्लाह के रसूल ने कहा ऐ अल्लाह मै दो कमज़ोर अनाथ और स्त्री के अधिकारों से आलोचनात्मक हूँ। (यह हदीस हसन है। इस को "निसाई" ने अच्छी सनद के साथ वर्णन किया है)

मनुष्य के सृष्टि की बुध्दिमत्ता।

यह मनुष्य जिसके लिए ईश्वर ने इस ब्रह्माण्ड में स्थिर हर विषय को आधीन बनाया है, और सारी प्रकृतियों से इस को अधिक सम्मान दिया है। ईशवर ने इस की बहुत अच्छे कारणों की वजह से सृष्टि की है। क्यों कि ईश्वर बेकार खेल-कूद से दूर है। ईश्वर ने कहा बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात और दिन के बदल-बदल कर आने जाने में अक्ल वालों के लिए निशानियाँ है। जो खडे और बैठे और लेटे (हर हाल में) खुदा को याद करते और आसमान और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते (और कहते) हैं कि ऐ परवरदिगार। तू ने इस (मख्लूक) को बे-फ़ायदा नही पैदा किया। तू पाक है, तो (क़ियमत के दिन) हमें दोज़ख के अज़ाब से बचाइयो। (आल-इंम्रान 191-192)

ईश्वर ने काफिरों के बुरे अनुमान के संबंधित कहा हमने आसमान और ज़मीन को और जो (कायनात) उन में है, उस को मस्लहत से खाली नहीं पैदा किया। यह उनका गुमान है, जो काफिर हैं, सो काफिरों के लिए दोज़ख का अज़ाब है। (स्वाद, 27)

ईश्वर ने मनुष्य की खाने-पीने और धन इकट्ठा करने के लिए सृष्टि नहीं कि है, इस प्रकार से तो मनुष्य जानवरों के समान होगा। लेकिन ईश्वर ने मनुष्य को सम्मान दिया और सारी प्रकृति में महान बनाया लेकिन बहुत सारे लोग कृतघ्न है, जो अज्ञानी है या अपनी सृष्टि की सच्ची ज्ञान का तिरस्कार करते है, और

उनकी इच्छा केवल दुनिया की चीज़ों से आनंद लेना है, इस प्रकार के लोगों का जीवन जानवरों के जीवन के समान है, बल्के ये लोग जानवरों से गये बीते हैं। ईश्वर ने कहा और जो काफिर है, वे फायदे उठाते है और (इस तरह) खाते है जैसे हैवान खाते है और उनका ठिकाना दोज़ख है। (महम्मद, 12)

ईश्वर की ओर

निश्चित रुप से धर्म और प्राकृतिक विज्ञान दोनें शंका कृतध्नता और मिथक के खिलाफ एक लडाई लड रहे हैं। इस लडाई में सदा एक ही आवाज़ रही है और रहेगी और वो आवाज़ ईश्वर की ओर।

मार्कस ब्लाँक

क्वाँटम सिध्दाँत के व्यवस्थापक

ईश्वर ने कहा (ऐ मुहम्मद (स)!) उन को उन के हाल पर रहने दो कि खा लें और फ़ायदे उठा ले और (लम्बी उम्मीद उन को (दुनिया में) फ़साए रहे। बहुत जल्द उन को (इस का अंजाम) मालूम हो जाएगा। (अल हिज्र, 3)

ईश्वर ने कहा और हम ने बहुत से जिन्न और इंसान दोज़ख के लिए पैदा किये हैं, उन के दिल हैं, लेकिन उनसे समझते नही और उन की आँखे है, मगर उन से देखते नहीं। और उन के कान हैं, पर उनसे सुनते नहीं। ये लोग (बिल्कुल) चारपायों की तरह हैं, बल्कि उन से भी भटके हुए, यही वे हैं जो गफ़लत में पड़े हुए है। (अल आराफ़, 179)

सारे लोग यह विश्वास रखते हैं कि उनके शरीर का हर-हर अंग की किसी अच्छे कारण के लिए ही सृष्टि की गयी है। यह आँख देखने के लिए और यह कान सुनने के लिए इसी प्रकार से दूसरे अंग। तो क्या यह संभव है कि मनुष्य के शरीर के अंग अंग की तो किसी अच्छे कारण के लिए ही तो सृष्टि की गयी हो, और स्वयं मनुष्य की बिना किसी कारण (बेकार) सृष्टि की गयी हो? या फिर मनुष्य को यह ना पसंद है कि जब प्रजापित (खालिख) उसको अपनी सृष्टि का कारण बताये और वह उसको न माने?

तो फिर ईश्वर ने क्यों हमारी सृष्टि की? क्यों हमें सम्मान अता किया? और क्यों हमारे लिए हर विषय को आज्ञा पालन बनाया? परन्तु इसी बात की ख़बर देते हुए ईश्वर ने कहा और मैंने जिन्नों और इंसानों को इसलिए पैदा किया है कि मेरी इबादत करें। (अल ज़ारीयात, 56)

ईश्वर ने कहा वह (खुदा) जिस के हाथ में बादशाही है, बडी बरकत वाला है, और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। उसी ने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया, ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में कौन अच्छे काम करता है, और वह ज़बरदस्त (और) बख्शने वाला है। (अल मूल्क, 1-2)

निर्णायक प्रमाण

मनुष्य के लिए यह असंभव है कि वह अपने जीवन की शुरुआत या उसके सिलसिले को किसी प्रमुख शक्ति के निर्माण के बिना कल्पना कर सके मेरा यह विश्वास है कि सब दार्शनिक अपने-अपने जीवन संबंधी अनुसंधान में इस ब्रह्माण्ड के प्रणाली में स्थित निर्णायक प्रमाण से अपनी आँखे बंद रखली।

माजिन्स माक लियास

ब्रिटिश विज्ञान संगठन के सदस्य

सारे बुध्दिमान यह मानते है कि जो व्यक्ति किसी चीज़ का निर्माण करता है, वही उसके निर्माण के कारण का दूसरों से अधिक ज्ञान रखता है। और ईश्वर के तो बडे अच्छे अच्छे आदर्श है। उसी ने मनुष्य की सृष्टि की है, और वही मनुष्य की सृष्टि के कारण का सब से ज्यादा ज्ञान रखता है। यहाँ पर इबादत (प्रार्थना) का मतलब केवल नमाज़ और रोज़े (उपवास) से कहीं ज्यादा है, परन्तु यहाँ प्रार्थना में सारे ब्रह्माण्ड का निर्माण करना भी शामिल है। ईश्वर ने कहा उसी ने तुम को ज़मीन से पैदा किया और उसमें आबाद किया, तो उस से मग्फ़िरत मांगो और उसके आगे तौबा करो। (हूद, 61)

मनुष्य के सारे जीवन का निर्माण भी प्रार्थना में शामिल है। ईश्वर ने कहा। (यह भी) कह दो कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए है। जिस का कोई शरीक नहीं और मुझ को इसी बात का हुक्म मिला है और मैं सबसे अव्वल फ़रमांबरदार हूँ। (अल अनआम, 162-163)

उपासना सार्थक अवधारण है

मोहम्मद सलल्लाह अलैही व सल्लम ने फरमाया जब खियामत खडी हो जाय और तुम में से किसी एँक के हाथ में शाख हो तो उसको चाहिये कि उसे गाड दें, सहाबा ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (स) हम में से कोई (बीवी से) अपनी हवस पूरी करें तो क्या उसको इसका भी पुण्य मिलेगा अल्लाह के रसूल ने कहा आपका क्या खयाल है कि अगर वह हराम में अपनी हवस पूरी करता तो क्या उसे इसका गुणा नही मिलता इसी प्रकार से अगर वह हलाल में अपनी हवस पूरी करता है तो उसको इसका पुण्य मिलता हैं (उपन्यासः इमाम मुस्लिम)

हदीस शरीफ

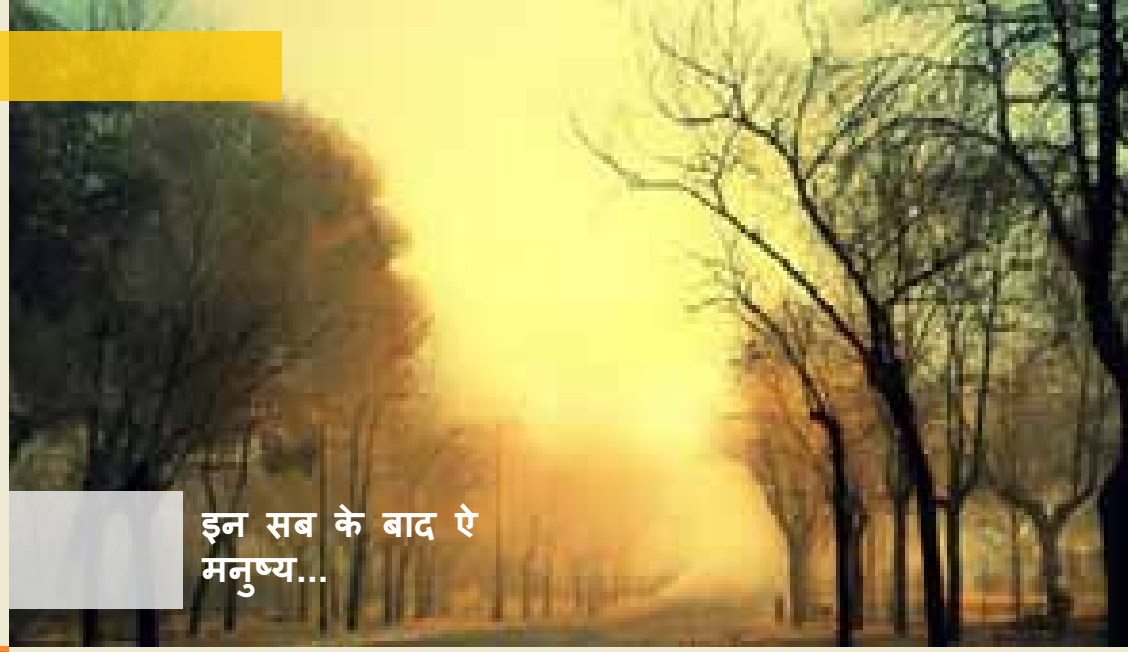

इन सब के बाद ऐ मनुष्य...

जब यह सारा ब्रह्माण्ड आप के लिए आज्ञा पालन कर दिया गया है, और जब इस ब्रह्मण्ड की सारे चिह्न आपकी आँखों के सामने यह गवाही दे रहे हो कि एक अल्लाह के अलावा कोई ईश्वर नही, उसका कोई दूसरा नहीं। और जब आपको यह मालूम हो गया कि मृत्यु के बाद दुबारा ज़िंदा करना आकाश और पृथ्वी की सृष्टि से ज्यादा आसान है। ईश्वर ने आपको बडे अच्छे रुप में पैदा किया है, आपको बहुत ज्यादा सम्मान दिया है, और आपके लिए ब्रह्माण्ड को आज्ञापालन बना दिया है, तो फिर किस कारण से आप अपने इश्वर के बारे में धोखे में पड़े हुए हैं ? ईश्वर ने कहा ऐ इंसान! तुझ को अपने परवरदिगारे करीम के बारे में किस चीज़ ने धोखा दिया (वही तो है) जिस ने तुझे बनाया और (तेरे अंगों को) ठीक किया और (तेरी कामत को) एतदाल में रखा और जिस सूरत में चाहा, तुझे जोड़ दिया। (अल इनफितार, 6-8)

अवश्य रुप से आप अंत में अपने ईश्वर से मिलने ही वाले हो। ईश्वर ने कहा। ऐ इंसान! तू अपने परवरदिगार की तरफ (पहुँचने में) खूब कोशिश करता है, सो उस से जा मिलेगा। तू जिसका नामा (ए आमाल) उस के दाहिने हाथ में दिया जाएगा उस से आसान हिसाब लिया जाएगा, और वह अपने घर वालों में खुश-खुश आएगा, और जिस का नामा-ए-आमाल) उस की पीठ के पीछे से दिया जाएगा, वह मौत को पुकारेगा, और दोज़ख में दाखिल होगा। (अल इनशीख़ाख़, 6-12)

ऐ मनुष्य अपनी सृष्टि के सही कारण के लिए जीवन बिताते हुए इस जीवन और भविष्य जीवन की प्रसन्नता के रास्ते पर चलता रह, तब तू अपने जीवन में सुखी रहेगा और मृत्यु के बाद अपने ईश्वर से मिलने के समय तू आनंदित होगा।

यह सारा ब्रह्माण्ड अपने ईश्वर की प्रार्थना करने वाला है, इस ब्रह्माण्ड का हर प्राणी अपने ईश्वर की महत्ता प्रकट करता है। ईश्वर ने कहा। जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है सब खुदा की तस्बीह करती है। (अल जूमूआह, 1)

और उसकी महानता के सामने सिर झुकाता है। ईश्वर ने कहा क्या तुम ने नहीं देखा कि जो (मख्लूक) आसमानों में है और जो ज़मीन में है और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और चारपाए और बहुत से इंसान खुदा को सज्दा करते हैं और बहुत से ऐसे हैं, जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है। (अल हज, 18)

बल्कि हर-हर जीव अपनी-अपनी समानता के प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करता है। ईश्वर ने कहा। क्या तुम नहीं देखा कि जो लोग आसमानों और ज़मीन में है, खुदा की तस्बीह करते रहते हैं और पर फैलाए हुए जानवर भी और सब अपनी नमाज़ और तरबीह (के तरीक़े) जानते है और जो कुछ वे करते हैं (सब) खुदा को मालूम है। (अल नूर, 41)

क्या आपके लिए मनासिब है कि आप ब्रह्माण्ड के इस महत्वपूर्ण दृश्य से असावधान रहें? तो अवश्य रुप से आप बेइज्जत व्यक्ति हो जाओगे। ईश्वर ने सच कहा।

क्या तुम ने नहीं देखा कि जो (मख्लूक) आसमानों में है और ज़मीन में है और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और चारपाए और बहुत से इंसान खुदा को सज्दा करते हैं और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है और जिस आदमी को खुदा ज़लील करे, उस को कोई इज्जत देने वाला नहीं। बेशक खुदा जो चाहता है, करता है। (अल हज, 18)

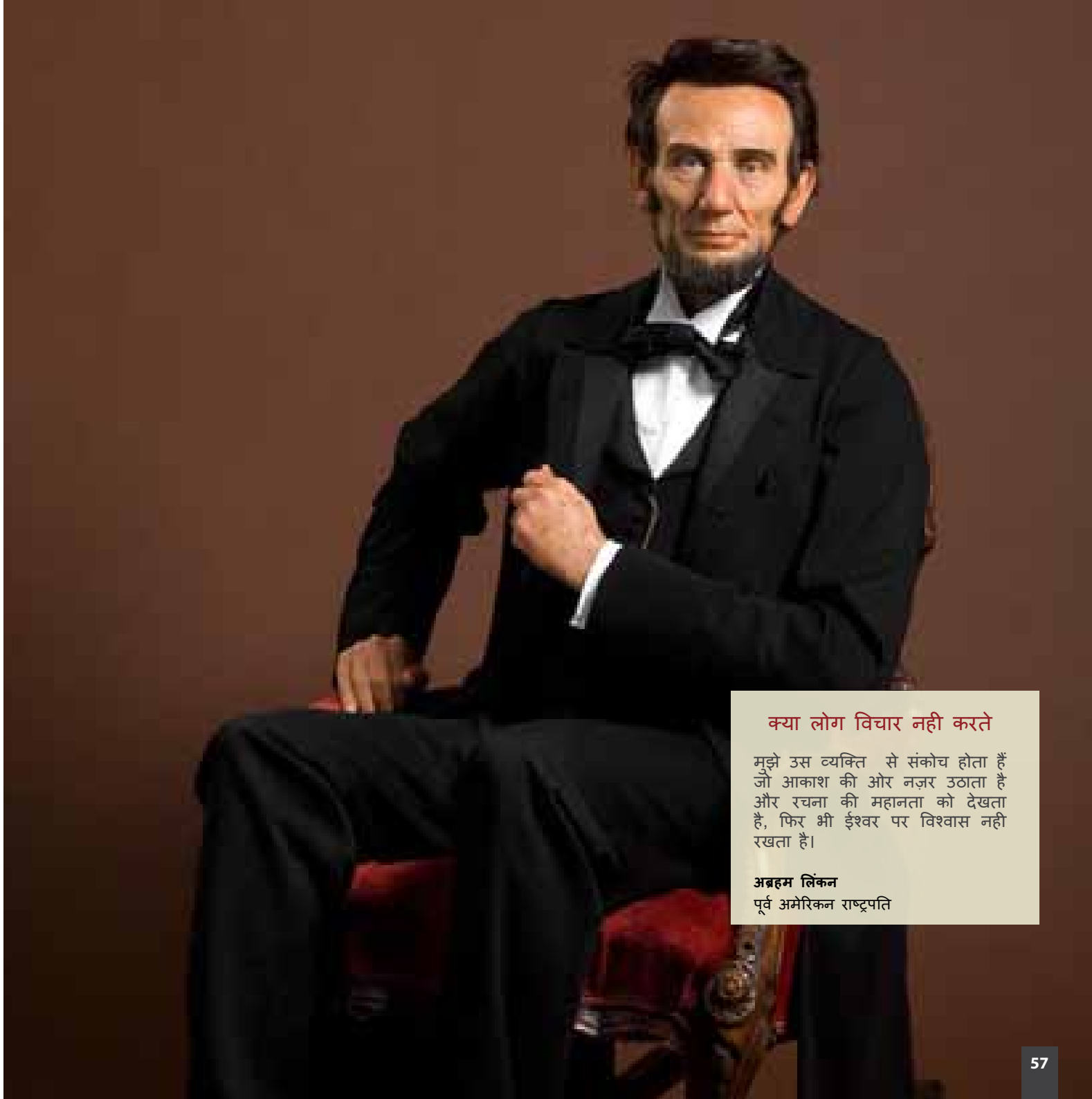

क्या लोग विचार नही करते

मुझे उस व्यक्ति से संकोच होता हैं जो आकाश की ओर नज़र उठाता है और रचना की महानता को देखता है, फिर भी ईश्वर पर विश्वास नही रखता है।

अब्रहम लिंकन
पूर्व अमेरिकन राष्ट्रपति